हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)
(वसंत)(पाठ 9)(जैनेंद्र कुमार – चिड़िया की बच्ची)
(कक्षा 7)

प्रश्न अभ्यास

प्रश्न 1:
किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था?

उत्तर 1:
माधवदास ने अपनी संगमरमर की नयी कोठी बनवाई थी। उसके सामने बहुत सुहावना बगीचा भी लगवाया था। उनको कला से बहुत प्रेम था । धन की कमी नहीं थी और कोई व्यसन छू नहीं गया था। सुंदर अभिरुचि के आदमी थे। घर में नौकर –चाकर और बहुत सी कोठियॉ , पैसा , सोना , नौकर–चाकर किसी की कमी नहीं थी । इतना होते हुए भी वे सुखी नहीं थें क्योंकि इतना होते हुए भी वे अकेले थे । उनकी कोठी सुनसान थी , इसीलिए वे चिड़िया को हर प्रकार की सुविधा देकर अपने पास रखना चाहते थे ।

प्रश्न 2:
.माधवदास क्यों बार–बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है ? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 2:
माधवदास चिड़िया से बार–बार बगीचे के बारे में इसलिए कह रहे थे क्योंकि उस चिड़िया ने उनका मन मोह लिया था , वे उसके आने से खुशी का अनुभव कर रहें थे और वे इस खुशी के पल को अपने से दूर नहीं करना चाहते थे । इसीलिए उन्होंने चिड़िया से यह कहा कि यह बगीचा तुम्हारा है तुम यहॉ खुशी से रह सकती हो पूरे बगीचे में जहॉ चाहे घूमो जिस पेड़ पर चाहे बैठो कोई तुम्हें रोकेगा नहीं तुम यहॉ स्वतंत्र होकर घूम सकती हो तुम्हारे रहने से मेरा भी मन लगा रहेगा । माधवदास ने यह सब निःस्वार्थ भाव से नहीं अपनी खुशी के स्वार्थ के लिए उन्होंने चिड़िया से ऐसा कहा ।

प्रश्न 3:
माधवदास के बार–बार समझाने पर भी चिड़िया सोने के पिंजरे और सुख–सुविधाओं को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी। दूसरी तरफ माधवदास की नजर में चिड़िया की जिद का कोई तुक न था। माधवदास और चिड़िया के मनोभावों के अंतर क्या–क्या थे ? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर 3:
माधवदास के बार–बार समझाने पर भी चिड़िया सोने के पिंजरे और सुख–सुविधाओं को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी, क्योकि वह इस संसार में केवल अपनी मॉ को जानती थी और उसकी गोद के आगे उसके लिए दुनिया की हर चीज बेकार थी ।जबकि माधवदास अपनी धन–दौलत को ही सबकुछ मानते थे और उससे कुछ भी खरीदने की ताकत रखते थे मगर वे अपने दौलत से चिड़िया की आजादी और मन की खुशी न खरीद सके ।

प्रश्न 4:
कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया को सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा सा लगा ? चालीस–पचास या इससे कुछ अधिक शब्दों में अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर 4:
कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर मुझे बहुत अच्छा लगा क्योंकि यदि वह नौकर के पंजे में आ जाती तो न वह अपनी माँ से मिल पाती और न स्वतंत्र होकर आसमान में विचरण कर पाती असकी आजादी छिन जाती और चिड़िया उसी घुटन में जीने को मजबूर हो जाती ।

प्रश्न 5:
माँ मेरी बाट देखती होगी' नन्ही चिड़िया बार–बार इसी बात को कहती है। आप अपने अनुभव के आधार पर बताइए कि हमारी जिंदगी में माँ का क्या महत्त्व है?

उत्तर 5:
माँ के जैसा इस दुनिया में और कोई नहीं हो सकता , वह जीवन के हर मोड़ पर हमारी ढाल बनकर रहती है और उसकी गोद में ऐसा लगता है मानों संसार की सबसे बड़ी खुशी मिल गई हो । वह हर मुसीबत को अपने ऊपर झेलने की ताकत रखती है पर पर अपने बच्चे पर कोई मुसीबत नहीं आने देती ।

प्रश्न 6:
इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों ?

उत्तर 6:
मेरे अनुसार इस कहानी एक अन्य शीर्षक माँ की लाड़ली भी हो सकता है क्योंकि वह चिड़िया की बच्ची अपनी माँ से बहुत प्रेम करती है ।

कहानी से आगे

प्रश्न 1:
इस कहानी में आपने देखा कि वह चिड़िया अपने घर से दूर आकर भी फिर अपने घोंसले तक वापस पहुँच जाती है। मधुमक्खियों, चींटियों, ग्रह–नक्षत्रों तथा प्रकृति की अन्य विभिन्न चीजों में हमें एक अनुशासनबद्धता देखने को मिलती है। इस तरह के स्वाभाविक अनुशासन का रूप आपको कहाँ–कहाँ देखने को मिलता है ? उदाहरण देकर बताइए।

उत्तर 1:
- पशु–पक्षी दिन में कहीं भी घूमें पर रात को अपने घोंसले में ही लौटकर आते है ।
- बच्चे निश्चित समय पर विद्यालय जाते हैं और निश्चित समय पर ही घर आते हैं ।
- मंदिरों के द्वार प्रातः निश्चित समय पर ही खुलते हैं ।

प्रश्न 2:

सोचकर लिखिए कि यदि सारी सुविधाएँ देकर एक कमरे में आपको सारे दिन बंद रहने को कहा जाए तो क्या आप स्वीकार करेंगे ? आपको अधिक प्रिय क्या होगा 'स्वाधीनता' या 'प्रलोभनोंवाली पराधीनता' ? ऐसा क्यों कहा जाता है कि पराधीन व्यक्ति को सपने में भी सुख नहीं मिल पाता। नीचे दिए गए कारणों को पढ़ें और विचार करें ।

उत्तर 2:

क:

क्योंकि किसी को पराधीन बनाने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति स्वयं दुखी होता है, वह किसी को सुखी नहीं कर सकता।

क:

किसी को पराधीन बनाने वाला व्यक्ति हमेशा ही दुखी रहता है इसका कारण यह है कि वह उस व्यक्ति से ज्यादा से ज्यादा काम करवाना चाहता है । और अंदर से उसे डर भी रहता है कि कहीं वह व्यक्ति उसे कोई नुकसान न पहुँचा दे ।

ख:

क्योंकि पराधीन व्यक्ति सुख के सपने देखना ही नहीं चाहता।

ख:

पराधीन व्यक्ति दूसरे पर आश्रित होता है वह उसी के अनुसार कार्य करता है उसको कुछ भी सोचने का करने की आजादी नहीं होती इसीलिए वह सपने में भी सुख नहीं देखना चाहता ।

ग:

क्योंकि पराधीन व्यक्ति को सुख के सपने देखने का भी अवसर नहीं मिलता।

ग:

यह बात सही है कि पराधीन व्यक्ति केवल अपने मालिक के हुक्म का गुलाम होता है । उसे इसके आग–पीछे कुछ नहीं पता होता इसीलिए उसे सपने देखने का भी अवसर नहीं मिलता ।